www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वाधीनता के मंत्र-द्रष्टा

दादा भाई नौरोजी

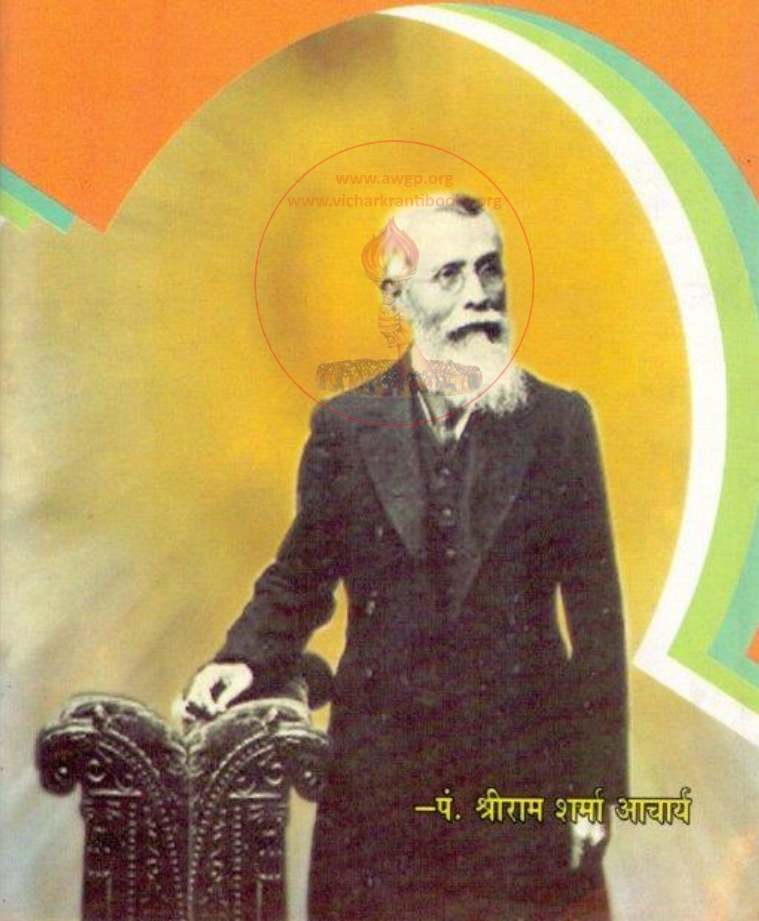

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org



स्वाधीनता के मंत्र-द्रष्टा— दादाभाई नौरोजी

नौरोजी पालन जी दोर्दी ने जिस समय संसार से विदा ली उस समय उनके एकमात्र पुत्र दादाभाई की आयु केवल चार वर्ष की थी। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न थी। दादाभाई के पिता बंबई के खदक नामक स्थान में एक छोटे से मकान में रहते थे और पुरोहिताई करते थे।

यद्यपि पारसियों में विधवा-विवाह की व्यवस्था है तथापि दादाभाई की माता माणिकबाई ने पुनर्विवाह करना पसंद न किया। उन्होंने आजीवन वैधव्य में रहकर और अपने परिश्रम के बल पर अपनी एकमात्र संतान दादाभाई को लिखा-पढ़ा कर योग्य बनाने में ही जीवन की सार्थकता समझी। संतानवती होने पर भी सांसारिक-लिप्साओं के वशीभूत होकर, जो विधवायें पुनर्विवाह के बंधन में फँस जाती हैं। उन्हें और उनकी संतानों को किन-किन कठिनाइयों और बंधनों में जीवन चलाना पड़ता है, उससे वे अनभिज्ञ न थीं। वे जानती थीं कि पुनर्विवाह कर लेने पर उनके पुत्र दादाभाई का विकास रुक जायेगा, जो उन्हें किसी प्रकार सह्य न था। अपनी कतिपय दुर्बलताओं के लालच में अबोध संतान का जीवन बरबाद कर देना उनकी दृष्टि में महापातक था। इसलिए आजीवन विधवा रहकर उन्होंने अपने पुत्र को शिक्षा-दीक्षा के साथ एक सुयोग्य नागरिक बनाने का निश्चय कर लिया।

दादाभाई की माता भारतीय माता का एक जीता-जागता उदाहरण थीं। यद्यपि उन्हें अक्षर-ज्ञान तक न था, तथापि सुनारी के संस्कारों के अधीन वे शिक्षा के महत्त्व को न केवल जानती ही थीं, अपितु उनमें पूर्ण विश्वास रखतीं थीं। दादाभाई की शिक्षा के लिए उन्होंने जिस तप, त्याग और परिश्रम का परिचय दिया, उसे जानकर भारतीय माताओं के पावन आदर्श के प्रति मस्तक नत हुए बिना नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहता। अपने जीवन में दादाभाई जो कुछ बन सके उसकी भूमिका में उनकी माता की पावन प्रेरणा के बीज ही सक्रिय रहे हैं। उसका आधार प्रकट करते हुए दादाभाई ने स्वयं एक स्थान पर यह कहा है—

"मेरी माता मेरे हर क्षण की साथी हैं। यदि मैं उन्हें अपनी धाय, गुरु, मित्र और भाग्य-निर्मात्री कहूँ, तो कोई अत्युक्ति न होगी। मुझे कदम-कदम पर उनसे प्रेरणा मिलती रही। अपने आचरण में आज मैं जिस प्रकाश के दर्शन कर रहा हूँ, वह मेरी ममतामयी माता का ही फैलाया हुआ है। पिता के दिवंगत हो जाने के बाद उन्होंने मेरे मामा की सहायता से अपने लिए काम खोजे और अथक परिश्रम के साथ जीवन-यापन कर मेरी शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध किया। उन्होंने मुझे स्कूल में भेजा और उसके खर्च के लिए कड़ी से कड़ी मेहनत की।" दादाभाई ने माता का चरित्र चित्रण करते हुए आगे लिखा—

"मेरी माता पचास साल तक मेरी सहायिका तथा प्रेरणा-केंद्र बनी रहीं। मैं ही उनका एकमात्र सर्वस्व था। उनके जीवन की सारी अभिरुचि एकमात्र मेरे विकास तक ही सीमित थी और मुझे अधिक से अधिक योग्य बनाना ही उनके जीवन का लक्ष्य था। यद्यपि वे निरक्षर थीं, तथापि एक बुद्धिमती माता थीं, ऐसी माता जो संतान के प्रति अपने कर्तव्य को भी भली-भाँति जानती थीं। उन्होंने मुझे न केवल प्रेम ही किया बल्कि कड़ाई के साथ मुझ पर शासन रखते हुए अनुशासन की शिक्षा भी दी। वे मेरे सद्विचारों, भावों और कार्यों में सच्चे सहयोगी की तरह सहमत तथा सहायक रहीं। स्त्री शिक्षा के लिए मैं जो कुछ कर सका, उसमें उनका महान् सहयोग सम्मिलित रहा है। समाज के अंध-विश्वासों और विकृतियों को दूर करने में वे सदा ही मेरी सहायिका बनी रहीं आज मैं कर्तव्य अथवा व्यक्तित्व जिस रूप में जो कुछ भी हूँ, वह सब मेरी माता का ही प्रसाद है।"

मनुष्य जीवन में माताओं की महिमा का अद्वितीय स्थान है। यह माता के ही दिये संस्कार तो थे कि दादाभाई ने अपनी सारी शक्ति, सारी योग्यता और सारा जीवन समाज, देश और देश के भाइयों की सेवा में लगाकर अपने इस संकल्प को अक्षरशः चरितार्थ कर दिखाया कि मैं अपनी भारत माता को इस प्रकार प्यार करूँगा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और उसकी सेवा में इस प्रकार दत्तचित्त रहूँगा कि मैं भारत माता का अद्वितीय पुत्र और सेवक सिद्ध हो सकूँ। मैं आजीवन देशवासियों पर होने वाले अत्याचार तथा अन्याय को रोकने के लिए तत्पर रहूँगा और शासकों को ठीक मार्ग पर लाने के लिए सावधान करता रहूँगा। मैं भारतीय समाज को उसके अधिकारों तथा कर्तव्यों का समुचित ज्ञान कराऊँगा और स्वतंत्रता की प्रेरणा देकर उसे उस मार्ग पर बढ़ते हुए अपनी इन्हीं आँखों से देखकर प्रसन्न होऊँगा। यद्यपि मैं तब तक बूढ़ा हो चुका हूँगा, तथापि मेरे विचार और प्रेरणाएँ राष्ट्र में स्वाधीनता के लिए अक्षय तरुणाई का समावेश करती रहेगी।"

उन्नीसवीं शताब्दी का वह प्रारंभिक काल, जिसमें ४ सितंबर १८२५ को दादाभाई ने जन्म लिया था, भारत के इतिहास में अंधकारपूर्ण समय कहा जा सकता है। एक ओर तो भारतीय समाज नर-बलि और सती दाह जैसे अंध-विश्वासों में डूबी हुई थी और दूसरी ओर ईस्ट इंडिया कंपनी का कुशासन जनता को अन्याय एवं शोषण की चक्की में पीस रहा था। चोर, लुटेरों और अपराधियों की बहुलता से जन-जीवन बड़ा ही अरक्षित तथा आतंकित बना हुआ था। कंपनी सरकार सारे भारत में अपने पैर पसार चुकी थी। लेकिन उसका शासन जनता की खुशहाली के लिए नहीं था। उसका लक्ष्य तो भारत की अशिक्षित तथा अबोध जनता को लूट-लूट कर अपनी जेबें भरना था। कंपनी सरकार को जनता के हित से कोई सरोकार नहीं था।

ऐसे कुशासन तथा अविश्वस्त समय में जन्म लेकर जब दादाभाई कुछ करने और कहने योग्य हुए, तभी उन्होंने अपनी वाणी, कलम और कार्यों द्वारा भारत की सोई हुई जनता को जगाना प्रारंभ कर दिया और उसे एक ऐसा नेतृत्व तथा मार्ग दिया, जिस पर चलकर भारतीय राष्ट्र में नई चेतना, नया बोध और नया दृष्टिकोण मिला। दादाभाई के संदेशों में उसे ओज, तेज और साहस की प्राप्ति हुई, जो उसके आगामी स्वतंत्रता संघर्ष में संबल के रूप में सिद्ध हुआ।

दादाभाई की शिक्षा का प्रारंभ नेटिव—एजूकेशन, सोसायटी द्वारा संचालित स्कूल से हुआ और शीघ्र ही अपनी योग्यता के कारण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वे 'एल्फिंस्टन संस्थान' द्वारा स्थापित कॉलेज के लिए चुन लिए गये। दादाभाई ने जिस दिन से पढ़ना प्रारंभ किया, अपनी कक्षाओं में प्रथम ही पास होते रहे। उन्होंने प्रारंभ से लेकर अंत तक अपने शिक्षाकाल में इतने पारितोषिक तथा छात्रवृत्तियाँ पाईं कि उनके गुरुजन उन्हें एक असाधारण छात्र मानने लगे, किंतु जब उनकी योग्यता के साथ उनके राष्ट्रीय विचारों का समावेश हुआ और वे यदा-कदा अवसरों पर व्यक्त एवं प्रकट होने लगे, तब तो उनको अंग्रेज प्रोफेसर तक 'भारत की आशा' कहने और पुकारने लगे।

दादाभाई अध्ययन में विशेष रुचि रखते थे। विज्ञान तथा गणित उनके विशेष विषय थे। वे गणित के प्रश्न हल करने में कितनी रुचि रखते थे, यह बात इससे ही प्रकट हो जाती है कि स्कूल से जाते समय जानने वाले लोग दादाभाई को उनके अन्य साथियों के साथ रोक लेते थे और गणित के मौखिक प्रश्न हल करने को देते थे। उनके साथी भले ही उत्तर देने में असफल हो जाते हों, किंतु दादाभाई कभी असफल नहीं होते थे। इन घटनाओं की चर्चा करते हुए उन्होंने एक स्थान पर स्वयं लिखा है—'पहाड़ा और मौखिक गणित में मुझे विशेष रुचि रही है। खास-खास अवसरों पर स्कूल के प्रायः सभी विद्यार्थी किसी सार्वजनिक स्थान पर खड़े हो जाते थे और जनता किन्हीं भी विद्यार्थियों से मौखिक प्रश्न किया करती थी। ऐसे अवसरों पर हमारा अच्छा खासा मस्तिष्कीय व्यायाम हो जाता था। गणित के मौखिक उत्तर सुनकर जनता के लोग बड़े प्रसन्न होते थे और मेरी भूरि-भूरि प्रशंसा किया करते थे। इससे शिक्षा में मेरा उत्साह और भी बढ़ जाता था और मैं और भी मन लगाकर पाठ याद किया करता था।

अपनी शिक्षा संबंधी संस्मरण और उसका उद्देश्य प्रकट करते हुए दादाभाई बड़े संतोष से कहा करते थे—कि शिक्षा के विषय में, मैं बंबई के भूतपूर्व गवर्नर श्री माउंट स्टुअर्ट एल्फिंस्टन का आभारी हूँ और उस समय के उन दूरदर्शी नागरिकों को अपनी तथा अन्य बहुत से युवकों की ओर से धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने भारत में शिक्षा प्रसार के मंतव्य से बंबई के गवर्नर पद से इस्तीफा दे देने वाले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एलफिंस्टन महोदय को बंबई में 'नेटिव एजूकेशन सोसायटी' की स्थापना में तन-मन-धन से यथासंभव सहायता की।"

यदि इस संस्था के तत्त्वावधान में चलने वाले स्कूल और कॉलेज में फीस लगती होती, तो बहुत संभव था कि मैं उच्च शिक्षा से वंचित रह गया होता। मेरी माँ की आर्थिक स्थिति इस योग्य न थी कि वे आज जैसी महँगी शिक्षा मुझे दिला पातीं। नेटिव एजूकेशन सोसायटी के उस निःशुल्क शिक्षा सिद्धांत के प्रति मेरी अखंड आस्था हो गई और मैं निःशुल्क शिक्षा का समर्थक ही नहीं उसका प्रचारक बन गया। मेरा विश्वास है कि हर बच्चा चाहे वह अमीर हो या गरीब, उस शिक्षा के पाने का समान रूप से अधिकारी है जिसे ग्रहण करने की प्रतिभा उसमें है। मेरा दावा है कि यदि भारत जैसे गरीब देश में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था कर दी जाय, तो एक से एक विलक्षण प्रतिभायें समाज की सेवा के लिए विकसित एवं प्रकाशित हो सकती हैं, जो कि आज इस महँगी शिक्षा-प्रणाली में अवसर न पाकर दबी पड़ी रहती है। आगे मेरा पुनः विश्वास है कि यदि समाज के धनी-मानी तथा शिक्षित वर्ग मिलकर, चाहें तो भारतीय युवकों तथा बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा की कुछ न कुछ व्यवस्था कर सकते हैं। यह समाज तथा देश के हित में एक बड़ा काम होगा।"

दादाभाई एक निर्धन परिवार के बालक थे। बड़े परिश्रम और कठिनाई से उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। एम० ए० तक की जो शिक्षा दादाभाई ने प्राप्त की थी, उस समय वह एक बड़ा अर्थ रखती थी। उनके लिए ऐसे हजारों अवसर खुले पड़े थे, जिनमें यदि वे अपनी शिक्षा का उपयोग कर व्यक्तिगत लाभ उठाना चाहते तो अतुल धनराशि बड़ी सरलता से पैदा कर सकते थे। ऐसा करने के लिए लोगों ने उन्हें प्रेरणा भी दी और परामर्श भी, किंतु व्यक्तिगत सुख-सुविधा के प्रति निस्पृह दादाभाई, धनाढ्यता के लिए शिक्षा का उपयोग करने के लिए तैयार नहीं हुए। उनके लिए शिक्षा का सबसे सार्थक उपयोग क्या था, वह उनके ही शब्दों में इस प्रकार है—

"ज्यों-ज्यों मैं शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ता गया, त्यों-त्यों मेरी विचारधारा विभिन्न दिशाओं में फैलती गई। मैंने अपने अंतरतम की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गहराई से यह अनुभव किया कि मैंने अपने गरीब देशवासियों के पैसे से यह शिक्षा प्राप्त की है और अभी पा रहा हूँ। वे वैसे ही गरीब हैं जैसाकि मैं स्वयं हूँ। अतः यह विचार मेरे हृदय में गहराई से जड़ पकड़ते गये कि शिक्षा से मुझे जो योग्यता, प्रभाव अथवा आर्थिक लाभ हो रहा है अथवा आगे जीवन में होना है। वह सब मेरे देशवासियों की ही देन होगी। मुझे जनता जनार्दन का यह ऋण चुकता ही कर देना है। उसे चुकता करने का यही सबसे उत्तम ढंग हो सकता है कि मुझमें जो कुछ है और जो आगे होने की संभावना है, उसको अधिक से अधिक उसी की सेवा में समर्पित कर दूँ।"

शिक्षा के संबंध में दादाभाई के ये विचार निस्संदेह न केवल आदर्श हैं बल्कि अनुकरणीय हैं। दादाभाई ने जो कुछ कहा, उसे एक सच्चे वचनवद्ध व्यक्ति की तरह कार्य रूप में परिणत कर चरितार्थ कर दिया। जन-सेवा की अडिग निष्ठा और मन, वचन, कर्म की ही एकता का तो यह सुफल था कि वे भारतीय जनता के हृदय में राष्ट्र पितामह के रूप में प्रतिष्ठित माने जाते हैं और जन-क्षेत्र में भारत के वयोवृद्ध 'महापुरुष' संबोधित किये जाते हैं। स्वयं दादाभाई को इस आदरपूर्ण संबोधन पर कितना संतोष था, यह उनके इस कथन से प्रकट हो जाता है—"यदि मैं "भारत का वयोवृद्ध महापुरुष" के नाम से पुकारे जाने पर प्रसन्नता प्रकट करूँ, तो क्या यह मेरा अहंकार होगा ? नहीं, ऐसा नहीं है। यह संबोधन, यह उपाधि तो मेरे जीवन का सबसे बड़ा पारितोषिक होगी और है, फिर चाहे मैं इसके योग्य हूँ या नहीं। यह मेरे प्यारे देशवासियों के स्नेहपूर्ण, उदार और प्रसन्न हृदयों के अनंत उद्घोष की संसूचक है।"

दादाभाई ने अपने जीवन में जो कुछ भी किया वह सब जनता और देश की भलाई के लिए किया। उनके जीवन का एक छोटा-सा अंश भी उनका नहीं था और न वे उस पर अपना अधिकार ही समझते थे। उनका कहना था कि जिस राष्ट्र और समाज ने हमें जन्म और जीवन दिया है, उस पर हमारा अधिकार न होकर समाज और देश का ही अधिकार है। मेरा तन, मन, धन जो कुछ भी मेरे पास दिखलाई देता है, उस सबका उपयोग जनहित में करना ही मेरा कर्तव्य है और इतना भर ही मेरा अधिकार भी है। यद्यपि यह एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ज्वलंत सत्य है कि दादाभाई ने अपने लिए कभी न तो कुछ चाहा और न कभी कुछ किया, तथापि उनकी इस उन्नत एवं उदात्त परमार्थ भावना ने उन्हें जिस प्रतिष्ठा पर पहुँचा दिया, उसे जानकर विश्वास करना पड़ता है कि निष्काम-कर्म, योग्य कर्तव्यों और निर्लोभ सेवाओं का परिपाक उच्चतम स्वर्गीय सफलताओं के रूप में ही होता है। उन्हें प्रथम भारतीय प्राध्यापक होने का गौरव प्राप्त हुआ। वे ही प्रथम भारतीय हैं, जिन्हें सर्वप्रथम भारतीय जनता के सामाजिक, बौद्धिक और राजनीतिक विकास के लिए अनेक संस्थायें स्थापित करने का श्रेय प्राप्त हुआ। वे ही सर्वप्रथम भारतीय हैं, जिन्हें ब्रिटिश संसद का सदस्य होने का सम्मान प्राप्त हुआ। वे उस शाही कमीशन के भारतीय सदस्य नियुक्त हुए, जिसे भारत को आर्थिक न्याय दिलाने के मंतव्य से गठित किया गया था और वे ही सबसे पहले भारतीय हैं, जो भारत के लिए स्वशासन की माँग कर भारतीय स्वाधीनता के पितामह कहकर प्रतिष्ठित किए गए।

शिक्षा समाप्त कर कार्यक्षेत्र में उतरने का विचार बनाते ही बंबई सचिवालय ने उन्हें अपने यहाँ एक अच्छे पद तथा वेतन पर आमंत्रित किया, किंतु दादाभाई का जीवन-ध्येय पद अथवा पैसा न था। वे तो अपनी योग्यताओं का उपयोग किसी ऐसे कार्य में करना चाहते थे, जिससे राष्ट्र अथवा समाज का कुछ हितसाधन हो सके। अस्तु, उन्होंने उस बंधनपूर्ण सचिवालय के पद पर जाने से इनकार कर दिया और 'नेटिव एजूकेशन सोसायटी' के तत्वावधान में चलने वाले स्कूल में सहायक अध्यापक का पद स्वीकार कर लिया। उनके इस निर्णय का, उनके इष्ट मित्रों ने पहले तो स्वागत नहीं किया और उसे उनकी एक भावुक भूल मानी, किंतु जब दादाभाई ने अपने निर्णय का आधार प्रकट किया, तब सब न केवल सहमत ही हो गये बल्कि भूरि-भूरि प्रशंसा भी करने लगे। दादाभाई ने बतलाया कि सचिवालय की सेवा में मुझे जो पद मिलता, वह ऊपर से देखने में तो बड़ा महान् तथा अधिकारपूर्ण होता और वेतन के रूप में जो धन राशि मिलती वह भी अपेक्षाकृत काफी अधिक होती, किंतु यथार्थ में वह पद दासता के सिवाय और कुछ न होता। उसमें वैतनिक आधिक्य के बदले में सारी स्वाधीनता, स्वतंत्रता, चिंतन और राष्ट्रीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



सेवा की सारी भावनायें दहन हो जाती और यह मेरे जीवन की बहुत बड़ी असफलता होती। अध्यापक के पद पर रहकर मैं अपने विचार और अपनी भावनाएँ नवोदित छात्रों के अंतःकरण में स्थापित कर उन्हें वास्तविक राष्ट्रीयता में ढाल सकूँगा और जहाँ तक मैं समझता हूँ, यह मेरी एक अच्छी राष्ट्रीय सेवा होगी ? पैसों की वेदी पर जीवन के महान् उद्देश्य और समाज व देश की आवश्यकताओं को बलिदान कर देना एक ऐसा अपकृत्य है, जिसका स्वागत कदाचित् उन्हीं के द्वारा संभव है, जो राष्ट्र-द्रोह के सूक्ष्म स्वरूपों को नहीं समझते अथवा लोभ और लिप्सा के अतिरिक्त जिनके मानव में किसी उच्च अनुभूति की कोई तरंग ही नहीं उठती।"

जिसने अपने मन-मंदिर में सेवा और श्रम के देवी-देवता को प्रतिष्ठित कर रक्खा हो, उसे एक के बाद एक उन्नति के सोपान पार करते क्या देर लगती है ? दादाभाई कुछ ही दिन सहायक अध्यापक रहे कि फिर गणित और प्राकृतिक दर्शन के अध्यापक पद पर उन्नत कर दिये गये। इस प्रकार दादाभाई ने अपनी योग्यता और अध्यवसाय के बल पर भारतीयों के लिए अध्यापकी का वह द्वार उद्घाटित कर दिया, जिसकी आशा करना उस समय एक दूर का स्वप्न था। दादाभाई की इस सफलता से न केवल भारतीय जनगण को ही हर्ष हुआ, बल्कि उन्हें स्वयं भी कुछ कम प्रसन्नता न हुई, क्योंकि वे इसे अपनी व्यक्तिगत सफलता न मानकर समग्र देशवासियों की जीत मानते थे। उन्होंने अपने उस हर्ष को न जाने कितनी बार इन शब्दों में व्यक्त किया है। यहाँ तक कि जब वे ब्रिटिश पार्लियामेंट के सदस्य मनोनीत हुए, तब भी उन्होंने अपने प्राध्यापक पद का गर्वपूर्वक स्मरण किया था—"मुझे, मेरे अब तक के जीवन में बहुत से सम्मान प्राप्त हुए हैं, तथापि जितना गर्व मुझे प्राध्यापक पद पर नियुक्ति के समय हुआ, उतना और कोई पद, पदवी अथवा सम्मान पाकर नहीं हुआ। यद्यपि आज मैं ब्रिटिश लोक सभा का सदस्य होकर एक बहुत बड़े सम्मान का अधिकारी हुआ हूँ, तथापि मुझे अपनी प्राध्यापक की वह उपाधि आज भी प्यारी लग रही है। आज भी जब मेरे सहपाठी और सहयोगी मुझे प्राध्यापक दादाभाई कहकर पुकारते हैं, तो मेरा मन आनंद-विभोर हो जाता है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निस्संदेह कोई भी वह कार्य जिससे लोक-कल्याण का संपादन होता है, मनुष्य को अनिवर्चनीय आनंद का अधिकारी बना देता है, फिर चाहें वह कार्य छोटा-सा ही हो या बड़ा।

दादाभाई अध्यापन काल में केवल संबंधित विद्यालय अथवा छात्रों तक ही सीमित नहीं रहे। वे विद्यालय का कर्तव्य-पालन करने के बाद बचा हुआ बहुत-सा समय समाज में जाकर उसकी दशा देखने और उसकी आवश्यकताओं को खोजने में लगाते थे। इसी खोज-बीन में उन्होंने समझ लिया कि समाज की सर्वांगीण उन्नति एवं विकास के लिए स्त्री-शिक्षा की नितांत आवश्यकता है। जब तक भारतीय समाज में स्त्री-वर्ग इस प्रकार अशिक्षा के अंधकार में पिछड़ा पड़ा रहेगा, समाज की प्रगति संभव नहीं।

उन्होंने अनुभव किया कि शिक्षित माताओं, बहनों और पत्नियों के अभाव में समाज के विकास की बात तो दूर परिवारों तक में कोई प्रगति नहीं हो पाती। पारिवारिक विकास तो सुगृहिणी पर निर्भर है, और नारी सुगृहिणी तभी हो पाती है, जब सुशिक्षिता हो। शिक्षित गृहिणियों के बिना शिक्षित पुरुषों तक को, न तो घर में कोई आनंद या प्रेरणा का वातावरण मिलता है और न सामाजिक दृष्टिकोण में कोई सहायता।

आवश्यकता का अनुभव करना था कि दादाभाई ने अनेक विद्यार्थियों तथा अध्यापकों को लेकर स्त्री-शिक्षा संबंधी एक संस्था संगठित कर डाली। वे प्रायः दूसरे-तीसरे दिन इसकी बैठक बुलाने और उसमें अपने लेखों तथा भाषणों द्वारा कार्यकर्ताओं में प्रेरणा तथा प्रोत्साहन भरने लगे। वे यह सब तब तक बराबर करते रहे, जब तक कि संस्था के शत-प्रतिशत सदस्य उस आवश्यकता और उसकी पूर्ति के महत्त्व से सहमत न हो गये।

किंतु केवल इतने से ही तो उद्देश्य पूरा नहीं हो जाता। यह तो उद्देश्य की दिशा में पहला कदम था, क्योंकि पहले विचार फिर विश्वास और तब कार्य का क्रम आता है। विचार और विश्वास संपादित हो चुके थे और अब कार्य की बारी थी। बिना कार्य के विचार एक दिमागी फितूर और विश्वास भावुकता भर बनकर रह जाती है और किसी कर्मयोगी के लिए ये दोनों दुर्बलताएँ अशोभनीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मानी गई हैं। जिन्हें अपने पर विश्वास होता है, उन्हें अपने विचारों पर भी पूरा विश्वास रहता है, जिनको वे कार्यों में मूर्तिमान् कर प्रकाश रूप में प्रकट कर देते हैं। दादाभाई विचार-व्यसनी न थे और न संस्थावादी। वे विशुद्ध रूप से एक कर्मयोगी थे। कर्तृत्व को ही वे व्यक्तित्व का सच्चा स्वरूप मानते थे और उसी के द्वारा अपना और दूसरों का मूल्यांकन अथवा स्थानांकन किया करते थे। निदान उन्होंने तुरंत ही एक योजनापूर्ण कार्यक्रम बनाकर कार्यकर्ताओं के सम्मुख रख दिया।

स्त्री-शिक्षा प्रचार की योजना प्रारंभ हुई और दादाभाई के साथ सारे कार्यकर्ता उसमें जुट गये। आगे चलकर कार्यक्रम की सफलता का जो श्रेय उन्होंने पाया, वह यों ही सफलतापूर्वक नहीं मिल गया। शताब्दियों से पिछड़े समाज में स्त्री-शिक्षा का विचार सर्वथा नया विचार था। सामने आते ही लोगों को ऐसा लगा, मानो उन्हें कोई गलत काम करने की प्रेरणा दी जा रही है। इसकी प्रतिक्रिया लोगों पर हुई और उन्होंने उसकी अभिव्यक्ति भी की।

दादाभाई ने स्त्री-शिक्षा प्रचार के अपने संस्मरण बतलाते हुए स्वयं कहा है—"जब हम लोग यह सद्विचार लेकर लोगों के पास जाते थे, तब पता है क्या होता था ? लोग सहसा आपे से बाहर हो जाते थे और कह उठते थे कि आप लोग हमें गलत सीख देने के लिए आये हैं। आप लोग हमारी बहू-बेटियों को पढ़ा-लिखा कर मेम बना देना चाहते हैं। यहाँ से तुरंत चले जाओ, नहीं तो धक्के देकर दूर कर देंगे। बहुत बार तो कई लोग इतने क्रुद्ध हो गये कि हम लोगों को मकान की सीढ़ियों से धक्का तक दे दिया। इस प्रकार के न जाने कितने कटु अनुभव हम लोगों को हुए। बहुत-से साथी तो कई बार निराश तक हुए और कहने लगे कि जब लोग हित की बात कहने पर ऐसा दुर्व्यवहार करते हैं, तो ऐसा हमारा क्या स्वार्थ अटका है, जो द्वार-द्वार धक्के खाने जायें। निःसंदेह बड़ी विषम स्थिति आ गई थी।"

"किंतु, मैंने लोगों को समझाया कि केवल इतनी-सी कठिनाई से निराश नहीं हो जाना चाहिए। यह अपमान, यह तिरस्कार और यह कठिनाई तो किसी भी सामाजिक कार्यकर्ता का स्वाभाविक उपहार है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और यही तो वे कसौटियाँ हैं, जिन पर समाजसेवियों की भावनाओं की परख होती है। जो ईमानदार और सच्चे समाजसेवी होते हैं, वे ठहरे रहते हैं और जिनमें ढील-पोल होती है, मैदान छोड़कर भाग खड़े होते हैं। वे धैर्य, प्रयत्न और सहनशीलता तो समाज हितैषियों तथा सुधारकों की पहली विशेषताएँ होनी चाहिए। आप लोग अपने संतुलन पर नियंत्रण रखे हुए धैर्यपूर्वक प्रयत्न में लगे रहिए। लोग हमारे विचारों का महत्त्व और प्रयत्नों का मूल्य समझेंगे और तब, आज जो लोग निंदा करते हैं, कल प्रशंसा करने लगेंगे। यदि हम सब दो धारणाओं को अपने मस्तिष्क में दृढ़तापूर्वक धारण किये रहें, तो लोगों के व्यवहार की हम पर कोई भी अन्यथा प्रतिक्रिया न हो। एक तो यह कि रूढ़िग्रस्त समाज किसी दुराग्रही बच्चों की तरह होता है, जो एक-दो बार कहने से अपना दुराग्रह नहीं छोड़ता और न अपना हित-अहित समझ पाता है। उसे ठीक रास्ते पर लाने के लिए तो सावधानी के साथ सद्भावना रखते हुए और उनके दुराग्रह को बहलाते हुए सुधार का प्रयत्न करना पड़ता है, तब कहीं जाकर वह ठीक रास्ते पर आ पाता है। दूसरी यह कि हम सब जिस शुभ-संदेश पर निकले हैं, वह हमारा है, उसकी सफलता में हमारा अपना हित है। बात भी सही है। समाज हमारा है, उसका हित-अहित भी हमारा है। ऐसी धारणा रखने पर समाज द्वारा मिलने वाले अप्रिय व्यवहार और असहयोग को हम अपना जीवन-संघर्ष अथवा मार्ग की कठिनाइयाँ समझकर उठा लेंगे। जब तक हम समाज सेवा के कार्यों में परकीयता का भाव रखेंगे और अपने मन-मस्तिष्क को कर्तृत्व के अहंकार से मुक्त नहीं कर लेंगे तब तक प्रतिक्रियाओं के शिकार और आशा-निराशा के खिलौने बने रहेंगे। बार-बार हमारा उत्साह भंग होगा, प्रयत्न शिथिल होंगे और हम कोई काम ध्येयपूर्वक गंभीरता के साथ न कर सकेंगे।"

दादाभाई ने आगे बतलाया कि "सहयोगियों और सहकार्यकर्ताओं ने मेरी बात पर अमल किया और हमारा प्रयत्न पूरी तरह से चलता रहा। हम लोग द्वार-द्वार, घर-घर जाते रहे और माता-पिताओं से प्रार्थना करते रहे कि उनको अपनी लड़कियों को और कहीं पढ़ने के लिए भेजने की जरूरत नहीं, अपने ही बैठक,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बरामदे अथवा द्वार पर पढ़ाने के लिए उद्देश्य से आये हुओं को अनुमति दे दें और समय भी वे स्वयं ही निर्धारित कर दें। सच्ची सेवा भावना में बड़ी प्रेरणा होती है। बतलाते हुए बड़ी प्रसन्नता होती है कि धीरे-धीरे एक-दो, एक-दो करके लोगों ने हमारी प्रार्थना का स्वागत करना शुरू कर दिया और अनेक घरों में कन्याओं की कक्षाएँ लगने लगीं। यह हमारे सबके धैर्यपूर्ण प्रयत्नों की निरंतरता की सफलता थी।"

"काम बढ़ा, कन्यायें बढ़ीं और लोगों में लड़कियों की शिक्षा का उत्साह बढ़ा। स्वाभाविक था कि अगला कदम उठाने पर विचार किया जाता। विचार किया गया। कन्याओं का एक स्कूल स्थापित करने के सिवाय अगला कदम और हो भी क्या सकता था ? विचार गोष्ठी में कन्या पाठशाला प्रारंभ करने का प्रस्ताव आया। साफ कह दूँ, वह सभी हुई। स्वभाविक ही था, किसी नये विचार को कार्यान्वित करने से पूर्व उस पर खूब अच्छी तरह से विचार और हर पहलू पर तर्क-वितर्क कर लेना न केवल आवश्यक और उपयोगी ही होता है, बल्कि कल्याणकारी भी होता है। इस जनतांत्रिक पद्धति के अधीन सभी लोग अपनी-अपनी बात, अपना-अपना सुझाव अधिकार पूर्वक रख लेते हैं। उनकी हानि-लाभ, व्यावहारिकता और अव्यवहारिकता समझ लेते हैं और बहुत से मस्तिष्क जब खूब अच्छी तरह विचार कर किसी एक प्रस्ताव पर सहमत हो जाते हैं, तब वह प्रस्ताव किसी एक का न रहकर सबका हो जाता है और सभी को उसके प्रति एक आत्मीय भाव हो जाता है, फिर उनके कार्यान्वित प्रयत्न में किसी को यह अनुभव नहीं होता कि वह किसी एक के विचार अथवा निर्देश का पालन कर रहा है। यह अपरकीय-भाव किसी भी सार्वजनिक सेवा कार्य में कार्यकर्ताओं के संगठन की रक्षा करता है और जिसके बल पर समाज में बड़े से बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है।"

"हाँ तो कन्या पाठशाला का विचार दृढ़ हुआ और कार्यान्वित भी। जहाँ संगठन, सेवा और सामाजिकता का सद्भाव हो वहाँ कठिनाई का क्या काम ? कोई कठिनाई नहीं हुई। न धन की और न जन की। बहुत-से उत्साही विद्यार्थी स्वेच्छा से अध्यापन करने को तैयार ही नहीं हो गये, उन्होंने प्रतियोगिता पूर्वक अपने नाम लिखा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दिए। इस प्रकार अध्यापकों की एक बड़ी सूची तैयार हो गई। सभी ने सेवा-भाव से नाम दिये थे। वेतन का प्रश्न ही नहीं था।"

"अध्यापकों की समस्या हल हो गई। अब समस्या थी स्थान की। ऐसे स्थान की, जो कम से कम सात बजे से दस बजे तक के लिए तो मिल ही सकता, पर समस्या जटिल न होने पाई। अनेक सुविधा-संपन्न लोग इस कार्य के लिए जुट पड़े और उन्होंने एक नहीं अनेक स्थानों की व्यवस्था कर डाली। समाजसेवियों में जहाँ अपनी परोपकार भावना होती है, वहाँ वे समाज के अन्य परोपकार प्रवृत्ति के लोगों को भी पहचानने में भूल नहीं करते और उनसे संपर्क स्थापित करने में जरा भी संकोच नहीं करते।

"प्रयत्नशीलों ने, जिनमें से एक मैं भी था, श्री जगन्नाथ शंकर सेठ और कामा परिवार के उदार सदस्यों को दृष्टि में रखकर उनके पास पहुँचे। दोनों आशा-केंद्र बड़े लोगों में से थे, ऐसा माना जाता था। लेकिन उस दिन उन लोगों ने प्रमाण भी दे दिया कि वे लोग उन वास्तविक अर्थों में बड़े लोग थे जिन अर्थों में विवेकशील लोग किसी को बड़ा आदमी मानते हैं। स्पष्ट है उन वास्तविक अर्थों की कसौटी सद्विचारों और सत्कर्मों के सिवाय और क्या हो सकती हैं और इन दोनों कसौटियों की भी कसौटी सार्वजनिक हेतु तथा हित ही होती है।"

"हम लोगों के पहुँचने का कारण जानते ही श्री जगन्नाथ शंकर सेठ और कामा परिवार के सदस्य ऐसे प्रसन्न हो उठे, मानो हम सब लोग उनके निराकार विचारों को ही साकार करके उनके पास ले गये हों। आज मैं फिर उन लोगों को धन्यवाद देता हूँ कि उन महानुभावों में से श्री जगन्नाथ शंकर सेठ ने अपना एक कुटीर, बड़ा सुंदर कुटीर और कामा परिवार के सदस्यों ने अपना एक मकान कन्या विद्यालय के लिए बिना किसी एवज के दे दिया। यह हम लोगों के प्रयत्नों की एक और सफलता ही नहीं, उर्वर सफलता थी। उर्वर इस माने में कि पूर्वोक्त महानुभावों के उदाहरण का अनुकरण करते हुए फिर और भी अनेक लोगों ने स्थान दिये और उसके लिए वायदे भी किये।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

"इस प्रकार लगे हाथों दो-तीन बने बनाये विद्यालय भवनों की व्यवस्था हो गई। लेकिन उनके लिए इतनी लड़कियाँ तो नहीं थीं। अभी तक तो कुछ लड़कियाँ उनके घरों के बैठकों और बरामदों में ही पढ़ाई जाती थीं। लेकिन अब उनको और अनेक दूसरी लड़कियों को भी घरों से अलग स्कूलों में लाना था, किंतु इतना-सा परिवर्तन भी किसी पिछड़े समाज के लिए पहाड़ होता है। एक कदम उठाने के बाद उसी का पूरक अथवा अनुबद्ध कदम उठाते भी उसे ऐसी डगमगाहट आती है, जैसे चलना सीखने वाला कोई बच्चा एक पैर को आगे बढ़ाकर दूसरा पैर उसके पास लाने में काँपता और डरता है, फिर भी उसे चलाना और चलना तो पड़ता ही है।"

"प्रयत्न फिर प्रारंभ हुआ। यहाँ पर यह बतला देना शायद मेरी आत्मश्लाघा नहीं होगी कि इस बार मुझे ही अधिक प्रयत्न करना पड़ा। दूसरे सहयोगी यह समझकर कुछ नरवस से हो गये थे कि लड़कियों को पढ़ने के लिए विद्यालय भेजने के लिए कहने पर कहीं इसको उंगली पकड़कर प्रकोष्ठ पकड़ने का प्रयास न समझ बैठें, किंतु मैंने तो हर स्थिति और परिस्थिति के लिए साहस एवं सहनशीलता संचय कर रखी थी। साथ ही यहाँ पर इतना और बतला दूँ कि मैंने आत्मा की गहराई में उतरकर और जन-कल्याण की यथासंभव ऊँचाई पर चढ़कर अपने को अप्रिय अनुभवों के लिए प्रभाव शून्य रहने का अभ्यस्त बना लिया था। यह प्रभाव शून्यता किसी भी समाजसेवी के साहस, उत्साह और सक्रियता के लिए कवच का काम देती और आत्महीनता से उसके व्यक्तित्व की रक्षा करती है।"

मैं लोगों के पास गया, किंतु इस बार पहले से भी अधिक मार्मिक प्रार्थना, अधिक तत्परता और अधिक उपयोगी तर्क लेकर गया। उनके सामने लड़कियों को स्कूल भेजने की प्रगति का प्रस्ताव रखा। पहले से कहीं ज्यादा विवेक पूर्ण प्रतिक्रिया हुई। रूढ़िवादी हिंदुओं और प्रतिगामी पारसियों ने इस अगले कदम में न जाने कितने दुष्परिणामों की आशंका की, किंतु मैंने उन्हें आश्वस्त करने के प्रयास को कई माह तक जारी रखा। दिन-रात और सुबह-शाम कुछ भी नहीं गिना। भूख-प्यास और आराम-विश्राम की आवश्यकता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्थगित कर दी। जिसने, जिस समय और जितनी बार उत्तर देने और प्रार्थना सुनने के लिए जिस स्थान पर बुलाया, मैं एक आज्ञाकारी भृत्य के समान हाजिर हुआ और अंत में अपने उद्देश्य में सफल हो गया। सब मिलाकर छह पाठशालाओं के लिए चवालिस पारसी और चौबीस हिंदू कन्याएँ मिल गईं। आरंभ के लिए कन्याओं की यह संख्या असंतोषदायक नहीं थी, लेकिन इस सफलता के लिए मुझे कितनी दौड़-भाग करनी पड़ी, इसका अनुमान मैं यह कहकर ही दे सकता हूँ कि यदि इस पुण्य प्रत्यावर्तन को मैंने नंगे पैरों किया होता तो कदाचित् तलवों की त्वचा का स्थान कठोर पट्टों ने ले लिया होता। पारमार्थिक परिश्रम का फल मीठा ही नहीं, महान् भी होता है।

"कन्या पाठशालायें लगने लगीं। जनता ने बिना माँगे ही धन से सहायता कर इस नवीन क्रांति का स्वागत किया और बंबई के तत्कालीन गवर्नर लार्ड फाकलैंड ने अपनी सरकार की ओर से मुझे और मेरे सहयोगियों को न केवल बधाई ही दी, बल्कि यह कहकर हमारे कार्यों का अभिनंदन भी किया कि बंबई प्रांत की शिक्षा के इतिहास में इन स्थापनाओं को युग परिवर्तनकारी कहा जायेगा और वे दिनों दिन उन्नति तथा प्रगति के उच्च शिखर की ओर अग्रसर होती जायेंगी। अपने प्रयासों के इन मीठे और महान् फलों को पाकर हम सब कृतज्ञ हुए और जन-कल्याण की और भी दिशाओं में बढ़ने लगे। अब हमारी जनप्रिय एवं जन-हितकारी संस्था के पास न धन की कमी रही थी और न साधनों की। अपनी सेवाओं से जनता-जनार्दन को प्रसन्न कर सकने वाले पुरुषार्थियों के पास साधनों का अभाव हो जाना सहज स्वाभाविक ही होता है। जन-सुधार, सेवा और उसकी प्रियता के कारण, कार्य और परिणाम—तीनों उपग्रह एक ही वृत्त में एक साथ इस प्रकार परिभ्रमण किया करते हैं कि उनका वह सृजनशील क्रम कभी समाप्त ही नहीं होता। साधनों की प्रचुरता का पहला उपयोग तो यह किया गया कि अवैतनिक विद्यार्थियों को सधन्यवाद अध्यापन सेवा से अन्य विकास कार्यों के लिए मुक्त कर उनके स्थान पर सुयोग्य, अनुभवी और आचरणवान्, आवश्यकताग्रस्त व्यक्तियों को सवेतन अध्यापन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



कार्य में नियुक्त कर दिया गया। विद्यालय के उपकरणों में वृद्धि एवं विकास कर दिया गया और निर्धन छात्राओं की सहायता की व्यवस्था भी। तथापि पूर्व अवैतनिक अध्यापकों ने मेरी तरह ही विद्यालयों के निरीक्षण तथा विकास के लिए प्रचार-कार्य का दायित्व संस्था से माँग ही लिया। जन-सेवा के स्वरूप और उसके आनंद का अनुभव कर लेने वाले फिर उससे हटकर जा कहाँ पाते हैं ? इस प्रकार बंबई में और बंबई के माध्यम से भारत में एक युग से स्त्री-शिक्षा का वह दीप फिर जल उठा, जो देश पर आये आँधी और तूफानों में बुझ गया था। इसका श्रेय बहुत कुछ मुझे दिया जाता है, किंतु मैं इसका श्रेय उस परमपिता परमात्मा को देता हूँ, जिसने मेरी आत्मा में इस कल्याणकारी विचार का सृजन किया था।"

ऐसा नहीं कि स्त्री-शिक्षा का प्रचार कर दादाभाई संतुष्ट होकर निष्क्रिय हो गये हों। वे तो समाज के सर्वांगीण सुधार में विश्वास रखते थे। उन्होंने देखा और गंभीरतापूर्वक विचार करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यदि समाज में सुधारों की गति तीव्र करनी है तो अशिक्षित वर्ग को भी शिक्षित करना होगा। समाज में न केवल जिसकी बहुतायत है, बल्कि जिस पर समाज की धुरी का एक बड़ा भाग निर्भर करता है और वह वर्ग है समाज का प्रौढ़ वर्ग। बालकों और स्त्रियों की अपेक्षा प्रौढ़ों के संस्कार बदलना कठिन होता है। रूढ़िवाद और प्रतिगमन का रोग प्रौढ़ों में ही अधिक गहराई से लगा रहता है। उसके निरोग हो जाने पर शेष समाज तो आसानी से स्वस्थ बनाया जा सकता है। किसी भी समाज में प्रौढ़ वर्ग ही अगुआ होता है, उसकी मान्यताओं पर शेष समाज की मान्यताएँ ठहरी होती हैं और वही वर्ग सबसे कट्टर और पूर्वाग्रही होता है। नई पीढ़ी के परिवर्तन में भी यही वर्ग अधिक आगे आता है। यदि एक बार इस वर्ग को मोड़ा जा सके, तो सारा समाज सहज ही मुड़ जाता है।

उपायों में शिक्षा ही एक ऐसा अमोघ उपाय होता है, जिसके प्रयोग से बड़े से बड़े परिवर्तन संभव हो जाते हैं। दादाभाई ने प्रौढ़-शिक्षा का उद्देश्य बनाया और जी-जान से उसमें जुट गये। इस बार उन्होंने बंबई की 'ज्ञान-प्रसारक-मंडली' का सहयोग वांछनीय समझा और उससे संपर्क स्थापित कर अपने उद्देश्य में सम्मिलित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर लिया। दादाभाई के प्रभाव तथा विचारों की प्रेरणा थी, वह तो थी ही, 'ज्ञान-प्रसारक मंडली' के कार्यकर्ताओं ने अपना पूरा भाग अदा कर दिया। प्रौढ़-शिक्षा के विषय में उन्होंने दादाभाई के नेतृत्व में पूरा विश्वास किया और अपना अभियान छोड़ दिया।

प्रौढ़ों को शिक्षित करने के लिए तीन विधियाँ काम में लाई गईं। प्रथम—घर जाकर प्रेरणा प्रसार, दूसरी—सभा और व्याख्यान, तीसरी—साक्षरता और शिक्षा।

दादाभाई ने प्रतिदिन घर-घर जाकर लोगों को शिक्षा की उपयोगिता और आवश्यकता बतलानी शुरु की। बहुत बार उन्हें लोगों के ऊष्म-वाक्य सुनने को मिले। कोई कहता था कि ऐसा लगता है, आप लोगों के पास कोई काम नहीं है, इसीलिए दूसरों का समय खराब करने के लिए आ जाते हो। कोई कहता—हम लोगों के पास घर के और बाहर के काम-धंधों से ही फुर्सत नहीं, हम किस समय पढ़ने के लिए बैठ सकते हैं ? अनेकों का बहाना बना रहता कि अब हमारी पढ़ने की आयु तो है नहीं, जो पट्टी-बस्ता लेकर बैठें। बहुतों ने तो शिक्षा को अपने लिए निरुपयोगी ही नहीं बल्कि उपहासास्पद तक बतलाकर असहयोग दिखलाया, किंतु दादाभाई अपने साथियों के साथ घर-घर जाते और लोगों का समाधान करते रहे। आखिर वह दिन आया और चार-छह लोग पढ़ने के लिए तैयार हुए। बस फिर क्या था, प्रौढ़-शिक्षा की सायंकालीन पाठशालाएँ लगने लगीं। पढ़ाने वाले लोगों में दादाभाई प्रमुख व्यक्ति थे।

प्रौढ़ों में साक्षरता प्रसार के साथ-साथ उनमें सामान्य ज्ञान का विकास करने के लिए दादाभाई समय-समय पर और उपयुक्त स्थानों पर बड़ी-बड़ी सभाएँ करते थे। इन सभाओं में सम्मिलित होने के लिए दादाभाई स्वयं-सेवकों की टोलियाँ लेकर जाते और बहुत से लोगों को निमंत्रण दे आते थे। इन ज्ञान-सभाओं में विविध विषयों पर व्याख्यान हुआ करते थे, तथापि सभा में आयोजित अधिकांश व्याख्यानों का विषय मुख्यतः समाज-सुधार तथा राष्ट्रीय-संगठन ही हुआ करता था। इस कार्यक्रम से दादाभाई को जनता की मनोवृत्ति विकासोन्मुख करने में बड़ी सहायता मिली और जल्दी ही जनता में जागरण और सुधार के प्रति जिज्ञासा के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोगों ने अपने आचार-विचार और रहन-सहन की रीतियाँ विकसित करनी शुरू कर दीं। दादाभाई को समाज में समाहित होता यह परिवर्तन देखकर न केवल हर्ष ही होता था, बल्कि अधिकाधिक कार्य करने का उत्साह भी मिलता था।

प्रौढ़ों में शिक्षा के प्रति प्रेरणा उत्पन्न हुई और उन्होंने उसमें रुचि दिखलाई। कक्षायें लगाई जाने लगीं और बहुत-से लोग पढ़ने आये। दादाभाई उन पढ़ने वालों का निरीक्षण करते रहते थे और ऐसे लोगों को छाँट लेते थे, जो दूसरों से अपेक्षाकृत अधिक तेजी से आगे बढ़ते थे। ऐसे लोगों को साक्षरता के बाद वे अग्रिम शिक्षा में बढ़ा देते थे। जब ऐसे लोग अच्छी तरह पढ़ने-लिखने लगते थे, तब उनको आगे शिक्षा बढ़ाये रहने के लिए कहकर अन्यों को पढ़ाने के काम में भी लगाते थे, जिससे पढ़ने और पढ़ाने वालों की कभी कमी नहीं रही और इस प्रकार प्रौढ़-शिक्षा का आंदोलन सफलता की ओर चल पड़ा।

उस काल के भारत की गिरी दशा में मात्र सामाजिक सुधार ही राष्ट्र की उन्नति के हेतु नहीं बन सकते थे। समाज का संबंध शासन से भी रहता है। एक अच्छा समाज जहाँ एक अच्छे शासन को जन्म दे सकता है, वहाँ एक अच्छा शासन समाज को भी अच्छा बना सकता है। किंतु यह तभी अधिक संभव हो सकता है, जब शासन और समाज दोनों एक ही राष्ट्र से बनते हों अथवा दोनों किसी एक ही राष्ट्र के अंग हों, किंतु दुर्भाग्य से भारत को उस समय यह सुविधा प्राप्त नहीं थी। देश पर अंग्रेज-कंपनी का शासन चल रहा था।

कंपनी के अधिकारी भारत में अपने शासन द्वारा भारत का आर्थिक शोषण ही अपना लक्ष्य मानते थे। उन्हें समाज की अच्छाई-बुराई, उन्नति-अवनति से कोई सरोकार नहीं था और न वह सरोकार रखना ही चाहती थी। भारतीय समाज जितना अधिक पिछड़ा, अशिक्षित, अंधविश्वासी, अज्ञानी, असंगठित और सोया रहता उतना ही कंपनी राज्य के हित में था। अस्तु, राज्य जिन सामाजिक सुधारों का अधिकार रखता है, कंपनी शासन उतनों पर भी ध्यान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं देना चाहती थी। उसकी संपूर्ण शासन व्यवस्था दूषित तथा स्वार्थपूर्ण थी।

दादाभाई से यह बात छिपी नहीं थी। उन्हें कंपनी का कुशासन स्पष्ट समाज के अहित में दीख रहा था और वे उसमें सुधार की आवश्यकता का अनुभव कर रहे थे, किंतु उस समय के कंपनी राज्य के शासन सुधार के लिए कोई कार्यक्रम बनाना एक साहसपूर्ण बड़ा कदम था। दादाभाई में उस साहस की कमी नहीं थी और वे शासनिक सुधार की आवाज उठाने के लिए उपयुक्त अवसर की खोज में तत्पर रहने लगे। जल्दी ही उन्हें वह अवसर मिल गया, जिसका उन्होंने पूरा उपयोग करने का भरसक प्रयत्न किया।

ब्रिटिश-संसद की ओर से भारत में शासन करने के जो अधिकार कंपनी को मिले थे, उनकी अवधि समाप्त हो गई थी। कंपनी के अधिकारियों ने वह अवधि बीस साल के लिए और बढ़ाई जाने का प्रार्थना-पत्र दिया हुआ था। उस पर ब्रिटिश संसद में विचार होना था। प्रस्ताव आया कि भारत में कंपनी शासन की अवधि बढ़ाई जाये या नहीं। कंपनी-शासन में सुधार कराने के लिए यही उपयुक्त अवसर था। यदि इस समय इंगलैंड की सरकार को यह सुझाया जा सकता कि भारत में कंपनी का शासन भारत के हित में नहीं है, तो निश्चय ही उसकी शासन-अवधि नहीं बढ़ाई जा सकती। यदि इतना न भी हो, तो भी कम से कम कंपनी-शासन में सुधार की व्यवस्था तो की ही जा सकती थी।

किंतु इंगलैंड की सरकार का ध्यान कंपनी के कुशासन की ओर आकर्षित किस प्रकार किया जाये ? दादाभाई के सामने यह एक बड़ा प्रश्न था। इतना बड़ा काम अकेले तो किया नहीं जा सकता था। दादाभाई ने इसका भी उपाय निकाल लिया। उन्होंने बंबई की जनता को एक ऐसा संगठन बनाने के लिए आह्वान किया जिसकी सम्मिलित आवाज ब्रिटिश-संसद तक पहुँच सके। बड़े-बड़े आंदोलन जनता के सहयोग के बिना तो चलाये ही नहीं जा सकते। दादाभाई ने धुआँधार प्रचार कर भारत की सोई हुई जनता में राजनीतिक जागरण उत्पन्न किया। बड़ी-बड़ी सभायें कीं और जनता का संगठन बनाने के लिए प्रेरित किया। दादाभाई के इन कार्यों को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देखकर उनके संबंधियों तथा मित्रों ने समझाया कि आप सरकारी तत्त्वावधान में चलने वाले कॉलेज में प्रोफेसर हैं। राजनीति में पड़ने पर और सरकार का विरोध करने पर आपको अधिकारियों का कोप-भाजन बनना होगा, जिसका आपकी नौकरी पर कुप्रभाव पड़ेगा। अस्तु इन सब बातों और परिणामों पर विचार करते हुए आपको राजनीति से दूर ही रहना चाहिए।

दादाभाई को लोगों की यह सीख जरा भी समझ में नहीं आई। उन्होंने कहा कि प्रोफेसर होने के कारण मैं राजनीति में भाग लेने का अधिकारी नहीं हूँ, ऐसा मैं जरा भी नहीं समझता। जहाँ तक सरकार का विरोध करने का प्रश्न है, मैं सरकार का विरोध कर ही कब रहा हूँ ? मैं तो उसकी उस शासन नीति का विरोधी हूँ, जो न तो भारतीय जनता के हित में है और न कंपनी सरकार के। अन्याय और अनीति का विरोध करने का हर मानव को नैसर्गिक अधिकार है, जिसका उसको प्रयोग करना ही चाहिए। स्वार्थ की दृष्टि से अपने कर्तव्य को देखते हुए उसके पालन करने में संकोच करना मेरी दृष्टि में बहुत बड़ी निर्बलता है, जिसका स्वागत कर सकना मेरी शक्ति के बाहर की बात है। मुझे राजनीतिक सुधार का आंदोलन जाग्रत् करना है। जिसे मैं करूँगा ही।

दादाभाई के प्रचार और प्रयत्न से जनता में राजनीतिक चेतना का सूत्रपात हुआ। उन्होंने सुअवसर देखकर 'बंबई एसोसिएशन' नाम की एक ऐसी संस्था स्थापित की, जिसका मुख्य उद्देश्य भारतीय जनता के हितों की रक्षा करना और उसके सुधारों की आवाज को आवश्यक स्थानों पर पहुँचाना था। 'बंबई ऐसोसिएशन' के स्थापित हो जाने पर दादाभाई ने उसकी ओर से ब्रिटिश-संसद में प्रस्तुत करने के लिए एक मसविदा तैयार किया, जिसकी मुख्य दो धारायें थीं। एक तो यह कि भारत में अंग्रेजी-शासन पद्धति प्रबुद्ध ढंग की बनाई जाये। दूसरी यह कि सिविल सर्विस और विधान-परिषदों में भारतीयों को प्रवेश करने दिया जाये।

भारत में राजनीतिक सुधारों के लिए दादाभाई का यह क्रांतिकारी कदम था। उसकी प्रतिक्रिया इंग्लैंड की जनता में हुई। वहाँ के अधिकांश समाचार-पत्रों ने इन माँगों को अनधिकार चेष्टा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कहकर उपहास और कड़ी आलोचना की। देश में एक निराशा-सी छा गई। पर दादाभाई निराश होने वाले व्यक्ति न थे। उन्होंने पुनः जनता में धुआँधार प्रचार करना शुरू कर दिया और जनता को बताया कि इंगलैंड के कुछ लोगों के विरोध करने से निराश हो जाना ठीक नहीं। अधिकारों के लिए आशापूर्वक 'संघर्ष करते रहना ही हम सब का कर्तव्य है। मुझे आशा ही नहीं विश्वास भी है कि अधिक दिनों तक हमारी उचित माँगों को दबाया नहीं जा सकता। सत्य और सत्प्रयत्न कभी निष्फल नहीं जाते। हमें परिणाम के लिए शीघ्रता न करके अपने तन, मन, धन से प्रयत्नों में लगा रहना चाहिए। हमारा पक्ष सत्य और न्याय पथ पर आधारित है। अंततः हमारी जीत होगी। यह निश्चित है।

इसी क्रम में दादाभाई ने विरोधियों को उत्तर देने और जनता में जागरण बनाये रखने के लिए एक समाचार-पत्र की आवश्यकता अनुभव की। देश में जो समाचार-पत्र उस समय प्रकाशित हो रहे थे, उनकी नीति कंपनी सरकार को खुश रखना था। अतएव वे दादाभाई के विचारों तथा उद्देश्यों में सहयोग करने में संकोच कर रहे थे। दादाभाई इतने अमीर आदमी न थे कि अपने पास से समाचार-पत्र निकाल सकते। अतः उन्होंने इस पुण्य कार्य में सहयोग करने के लिए देश के धनाढ्य व्यक्तियों का आह्वान किया। दादाभाई की अपील में इतनी मार्मिकता तथा राष्ट्र-वेदना थी कि उसका अनुकूल उत्तर मिलते देर न लगी। बंबई के कामा भाईयों ने समाचार-पत्र के लिए धन लगाने का वचन दिया। दादाभाई ने उसका लाभ उठाया और 'रास्तगुफ्तार' (सत्य वक्ता) नाम का एक समाचार-पत्र प्रारंभ कर दिया। उन्होंने केवल उस पत्र की स्थापना ही न की बल्कि उसके अवैतनिक संपादक भी बने। अब वे दिन में दो कॉलेजों का काम करते थे और रात में समाचार-पत्र का संपादन और उसके लिए लेख लिखते थे।

दादाभाई ने अपने प्रभाव के बल पर खुरशेद जी नसरवान जी कामा को इस बात के लिए राजी कर लिया कि जनता में समाचार-पत्र की प्रतियाँ मुफ्त में बाँटी जायें। खुरशेद जी नसरवान जी कामा एक समझदार आदमी थे। उन्होंने समाज के हित में पैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का लोभ त्याग दिया। दादाभाई ने दिन और रात एक करके धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक सुधार के क्षेत्र में एक उस पादरी का आदर्श स्थापित कर दिया, जो अपने उद्देश्य के प्रचार के लिए हर गाँव में जाता था और वहाँ पर कुछ दिनों बसकर 'समाचार-पत्र' निकालता था और उसके द्वारा समस्त मानव-जाति की मुक्ति के लिए जनता में जागरण लाता था। दादाभाई ने भी उसका आदर्श ग्रहण किया और नगर-नगर, गाँव-गाँव समाचार-पत्रों से भर दिये। उनके इस अभूतपूर्व प्रयत्नों का फल यह हुआ कि जनता में न केवल राजनीतिक चेतना का ही संचार हुआ, बल्कि समाज में व्याप्त अंध-विश्वास, अज्ञान, अन्याय एवं रूढ़िवाद की जड़ें हिलने लगी। युगों की सोई जनता जागकर प्रबुद्ध नागरिकता की ओर अग्रसर हो चली। दादाभाई की यह एक बड़ी सफलता थी।

दादाभाई के राजनीतिक सुधार पर के लेख इतने मार्मिक और तथ्यपूर्ण होते थे कि विरोधी तक सहमत हुए बिना न रहते थे। दादाभाई के 'रास्तगुफ्तार' ने न केवल भारत में ही अपितु इंगलैंड की जनता में भी हलचल मचा दी। पहले जहाँ बंबई एसोसिएशन की ओर से की गई सुधारों की माँग की खिल्ली उड़ाते थे, वहाँ अब बहुत से लोग इस आशय के वक्तव्य निकालने लगे—"यह समझना एक भारी भूल होगी कि भारत में उठते हुए इस प्रकार के आंदोलन को दबाया जा सकता है अथवा भारतीयों की उचित माँगों की उपेक्षा की जा सकती है, किंतु इससे भी बड़ी भूल यह समझना होगा कि भारतीयों की माँगों को स्वीकार करके ब्रिटेन उन पर एहसान करेगा। ऐसी भूल करने के बजाय यह नीति ही कल्याणकारी होगी कि भारतीयों की माँगों पर उदारतापूर्वक विचार किया जाये, ब्रिटेन के प्रति उनका अनुराग तथा विश्वास को मान्यता दी जाये और शासन-प्रणाली में उनकी उन्नति का उद्देश्य शामिल किया जाये। यदि भारतीयों के साथ न्याय किया जाता है, उनकी स्थापनाओं को मान्यता दी जाती है, तो संभव है कि ब्रिटेन भारत पर एक लंबे समय तक अपना प्रभाव तथा प्रभुत्व बनाए रख सके। शासकीय दुराग्रह के दुष्परिणाम ऐसे हो सकते हैं कि जिनका प्रभाव भारत में अंग्रेजों के हित में अनिष्टकर सिद्ध हों।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इतना ही नहीं दादाभाई के प्रचार से प्रभावित होकर जान ब्राइट, जोजेफ ह्यूम और रिचर्ड कावडेन जैसे प्रबुद्ध नागरिकों ने इंगलैंड में भारत की माँगों के पक्ष में जोरदार आवाज उठाई और यहाँ तक कह डाला कि भारत पर अंग्रेजों का शासन अनुचित है। उस पर उनका ही शासन होना चाहिए, जो वहाँ के निवासी हैं। भारत विदेशियों के शासन से कभी भी संतुष्ट न होगा और होना भी नहीं चाहिए, क्योंकि पराधीनता किसी भी देश के लिए अपमान की बात है। उन लोगों ने इंगलैंड में भारतीयों के हितों की रक्षा के लिए 'भारतीय सुधार समिति' नाम की एक संस्था स्थापित की और उसके द्वारा इंगलैंड में नागरिक आंदोलन प्रारंभ कर दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि ब्रिटिश संसद को भारतीयों के बहुत से अधिकार मानने पड़े। दादाभाई के प्रयत्नों की यह एक और बड़ी सफलता थी, जिसने उन्हें भारतवर्ष में ही नहीं इंगलैंड में भी प्रभावपूर्ण ख्याति का अधिकारी बना दिया।

अपनी इन सफलताओं के आधार पर दादाभाई ने गंभीरतापूर्वक विचार कर यह निष्कर्ष निकाला कि यदि जी-जान से जुटकर प्रयत्न किया जाये, तो भारत को विदेशी राज्य से मुक्त कराया जा सकना असंभाव्य नहीं है। उन्होंने अपने इस निष्कर्ष को हृदयंगम कर उसी के प्रकाश में आगे का कार्यक्रम बनाया और चाहा कि यदि उनको इंगलैंड में अपना कार्य क्षेत्र बनाने का अवसर मिल जाये, तो भारत को स्वाधीनता की ओर तथा इंगलैंड को उसके समर्थन की ओर अग्रसर करना आसान हो जायेगा। 'जहाँ चाह, वहाँ राह'—दादाभाई को जल्दी ही ऐसा अवसर मिल गया। कामा भाइयों ने इंगलैंड में अपने व्यापार की एक शाखा खोलने का विचार किया और चाहा कि दादाभाई वहाँ उनके साझीदार होकर चले जायें। दादाभाई ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और वे जल्दी ही इंगलैंड चले गये, किंतु जाने से पूर्व वे अपने समाचार-पत्र 'रास्तगुफ्तार' का दायित्व एक सिंडीकेट को सौंपकर और इंगलैंड से सहयोग करते रहने का वचन देते गये।

इंगलैंड में पहुँचकर दादाभाई सारा समय व्यापार में ही नहीं लगाते थे। व्यापारिक कामों में आवश्यक समय देने के बाद वे शेष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



सारे समय में देशहित के काम किया करते थे। सबसे पहले दादाभाई ने इंगलैंड में एक ऐसा छात्रावास स्थापित किया, जिसमें सिविल सर्विस तथा अन्य ऊँची परीक्षाएँ देने के लिए जाने वाले भारतीय छात्र एक साथ एक स्थान पर रहने और दादाभाई से राष्ट्रीय हित की शिक्षा एवं प्रकाश पाने लगे।

अपने प्रवास काल में दादाभाई ने इंगलैंड के सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओं, ग्लैडस्टन, कांडेन, ब्राइट, हर्बर्ट स्पेंसर और कार्लाइल आदिकों को साथ संपर्क स्थापित कर उनके कार्यों में ईमानदारी से हाथ बटाकर उनकी सद्भावना प्राप्त कर ली। अपनी योग्यता, ईमानदारी और ब्रिटिश जनता की सेवा के फलस्वरूप दादाभाई इंगलैंड की जनता में न केवल लोकप्रिय हो गये, बल्कि उसके विश्वास पात्र भी बन गये।

इसी बीच अफीम के व्यवसाय और कतिपय व्यापारिक अनैतिकताओं के कारण दादाभाई का कामा भाईयों से विरोध हो गया। उन्होंने उनका साथ छोड़कर कपास का अपना स्वतंत्र व्यवसाय करना प्रारंभ कर दिया और जल्दी ही अपनी साख बाजार में जमा ली। समाज-सेवा और व्यापारिक संबंधों ने दादाभाई को इंगलैंड में इतना महत्त्वपूर्ण बना दिया कि वे भारत के औपचारिक राजदूत माने जाने लगे और पार्लियामेंट में उनकी आवाज के अर्थ लगाये जाने लगे। दादाभाई ने ब्रिटिश जनता की स्वतंत्र मनोवृत्ति तथा उसकी जागरूकता से यह अच्छी तरह समझ लिया कि इंगलैंड का वास्तविक शासन जनता के हाथ में है। यदि उसको भारत के पक्ष में किया जा सके, तो निश्चय ही भारतीय स्वाधीनता के बीज पल्लवित किए जा सकते हैं। अतएव उन्होंने अपनी सारी योग्यता, सारा पैसा, सारा प्रभाव और सारा संपर्क न केवल इंगलैंड की ही बल्कि स्काटलैंड, आयरलैंड आदि उसके भाग-विभागों की जनता को भी भारत के पक्ष में जगाना शुरू कर दिया। उनके प्रयत्न सफल हुए और ब्रिटिश जनता भी भारतीय माँगों के पक्ष में खड़ी होने लगी।

ग्रेट ब्रिटेन का पक्ष पा जाने पर भी दादाभाई का उद्देश्य पूरी तरह सिद्ध नहीं हुआ था। पार्लियामेंट में जनता की आवाज पर ठीक से ध्यान नहीं दिया जाता था। ब्रिटिश शासन तंत्र के स्तंभ अपनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पुरानी चाल पर ही चले जा रहे थे। एक तो भारत के हितकर प्रस्ताव संसद में नहीं रखे जाते थे और यदि रखे भी जाते थे, तो उन पर ठीक से विचार नहीं किया जाता था। इसलिए दादाभाई ने अनुभव किया कि ब्रिटिश पार्लियामेंट में उनका अपना कोई प्रतिनिधि होना आवश्यक है। अस्तु, वे इंगलैंड में एक चुनाव क्षेत्र बनाने में संलग्न हो गये। उन्होंने डब्ल्यू० बनर्जी को साथ लेकर 'लंदन इंडियन सोसायटी' नामक एक और संस्था स्थापित की। इस संस्था के सहयोग से उन्होंने ब्रिटिश जनता की अभूतपूर्व सेवा की, जिसके फलस्वरूप हालवर्न निर्वाचन क्षेत्र की जनता ने स्वयं उन्हें ही ब्रिटिश संसद के उम्मीदवार की हैसियत से खड़ा किया, किंतु इस बार वे सफल न हो सके, तथापि वे निराश न हुए और अगले चुनाव की तैयारी करने लगे। उन्होंने अगले चुनाव के लिए फिंसवरी निर्वाचन क्षेत्र चुना और अपने साथियों तथा सहयोगियों की सहायता से प्रचार में संलग्न हो गये। वे घर-घर मतदाताओं से मिलने जाते, उनसे भेंट करते। सभायें बुलाते और उसमें भाषण देते। उन्होंने चुनाव के बहुत पहले से ही मतदाताओं से संपर्क बनाए रखा और अपने दृष्टिकोण को उनके सामने रखा। मतदाताओं ने दादाभाई की योग्यता और उनके निर्वाचन उद्देश्य को अच्छी तरह समझ लिया। इतना ही नहीं, उनकी सहायता के लिए एक निर्वाचन समिति भी बनाई गई और संगठित रूप से काम किया गया। इसका फल यह हुआ कि वे उस क्षेत्र से अपने विरोधी उम्मीदवार कैप्टन पैंटन को हराकर सफल हो गये। दादाभाई की इस सफलता में जहाँ उनके ब्रिटिश मित्रों की सहायता का बहुत हाथ था, वहाँ उनके उस चुनाव घोषणा पत्र का भी महत्त्व कम नहीं था, जो उन्होंने जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया था और जिसकी घोषणाओं को वे बहुत पहले से कार्यों में प्रकाशित करते आ रहे थे। वह घोषणा-पत्र इस प्रकार था—

"आयरलैंड का स्वशासन, लंदन की काउंटी कौंसिल के लिए म्युनिसिपलिटी के पूर्ण अधिकार, जनता के हित में दातव्य धनराशि का उपयोग, काउंटी कौंसिल में स्त्रियों की सदस्यता, स्थायी सार्वजनिक सुधार के लिए चल संपत्ति के स्वामियों द्वारा धन का दान, खाली जमीनों पर म्युनिसिपल कराधान, पारित और जिला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कौंसिलों में प्रतिनिधित्व का सवाल, स्थानीय शराब की दुकानों को बंद कराने का स्थानीय जनता को अधिकार, कारखाना अधिनियमों का विस्तार, खाद्य-पदार्थों पर कर समाप्ति, तीन-सौ पौंड की अधिक आय पर क्रमागत कर निर्धारण, कम खर्च वाली औद्योगिक अदालतों की स्थापना और मजदूरों के तमाम प्रश्नों को न्याय और सद्भावना की दृष्टि से सुलझाने की चेष्टा तथा भारतीय सुधार की समस्या।

सामान्यतः लोगों ने अनुमान लगाया कि दादाभाई ब्रिटिश-संसद के सदस्य हो जाने के बाद देश की सारी समस्याएँ भूल जायेंगे और ब्रिटिश-संसद के धुरंधर अंग्रेजों के प्रभाव में आकर उनके स्वर में स्वर मिलाकर अपनी स्थिति और प्रतिष्ठा की सुरक्षा में लग जायेंगे, किंतु लोगों का यह अनुमान सर्वथा गलत निकला। दादाभाई पदपिपासु राजनीतिज्ञ नहीं थे और न वे उन देश-भक्तों में से थे, जिनकी देशभक्ति साध्य न होकर किसी स्थिति विशेष की साधना होती है, जबकि अधिकार अथवा प्रभावपूर्ण स्थिति देश-भक्ति को चरितार्थ करने के लिए एक साधन मात्र होनी चाहिए। दादाभाई इस परिस्थिति में भी साधन और साध्य का अंतर न केवल जानते ही थे, बल्कि उसके उपयुक्त प्रयोग में विश्वास भी रखते थे।

ब्रिटिश-संसद में जाकर दादाभाई न बिके, न प्रभावित हुए और न ध्येय भ्रष्ट। देश के जिस हित के लिए उन्होंने ब्रिटिश-संसद की सदस्यता स्वीकार की, उसी में सारी शक्ति के साथ लग गये। उसका प्रमाण उनके उस भाषण से ही मिल जाता है, जो उन्होंने सदन में पहली बार दिया था। उन्होंने अपना विचार प्रकट करते हुए कहा था—

"मैं भारत के नाम पर आप सबके सम्मुख ब्रिटिश शासकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए और इस बात के लिए धन्यवाद देने को खड़ा हुआ हूँ कि उन्होंने मुझे एक भारतीय होने पर भी एक ऐसा मार्ग दिया है, जिससे चलकर मैं भारत की ओर से उसकी कठिनाइयों, शिकायतों और समस्याओं को रख सकूँ और आशा कर सकूँ कि उसका समर्थन करने वाले सदस्य बड़ी संख्या में मिल जायेंगे।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यद्यपि दादाभाई का यह प्रथम भाषण देखने में बड़ा सरल और विनम्रतापूर्ण विदित होता है, किंतु इसके भीतर जो उनकी भविष्यत् की संभावनाओं का तेज और ब्रिटिश संसद के विरोध की संभावना सन्निहित थी, उसको कोई भी मर्मज्ञ व्यक्ति अच्छी तरह से समझ बूझ सकता है और निस्संदेह दादाभाई का तेजस्वी स्वरूप ब्रिटिश-संसद में प्रकट होने लगा। उन्होंने भारतीय मामलों में ब्रिटिश सरकार अथवा भारतीय सरकार के हर अन्यायी कदम को रोकना-टोकना शुरू कर दिया। उदाहरण के लिए उनका उस समय का वक्तव्य सामने लाया जा सकता है, जो उन्होंने उस समय संसद में दिया था, जब मौद्रिक ह्रास के फलस्वरूप सैनिक तथा असैनिक अधिकारियों के वेतन में आ गई कमी को पूरा करने के लिए उनको मुआवजा दिये जाने की पेशकश की जा रही थी। दादाभाई ने भारत के वायसराय की इस सिफारिश की कड़ी आलोचना करते हुए जोरदार शब्दों में कहा था—

"अफसरों को मुआवजा देने के पक्षपातियों को यह बात सूझ ही नहीं पड़ रही है कि इसका एक दूसरा पहलू भी है। मुद्रा-मूल्य में गिरावट के फलस्वरूप भारत की गरीब जनता की क्या दशा होगी ? उन लोगों के लिए, मैं देख रहा हूँ कि किसी के पास सहानुभूति का लेशमात्र भी नहीं है, जिनकी सेवा के मुआवजे की रकम निकाली जायेगी। इसीलिए तो मैं कहता हूँ,कि भारत के लिए विदेशी सरकार का जुआ किसी भी जूए से कहीं अधिक भारी तथा हानिकारक है।"

इतना ही नहीं, दादाभाई ने भारत की घोर गरीबी का यथार्थ चित्र संसद में उपस्थित किया और उसके बाद भारत से इंगलैंड की ओर बहाये जाने वाले भारतीय धन के प्रश्न को लेकर दहाड़ उठे—"आप जरा तो अपने दिल और दिमाग से काम लें और न्याय-बुद्धि से सोचकर देखें कि आखिर इस मुआवजे की रकम आयेगी कहाँ से ? जब भारत का वायसराय मुआवजा दिलाने पर तुला ही है और उसकी राय पर हाँ में हाँ की नीति अपनाई जा रही है, तो उस प्रश्न पर किसी समिति को नियुक्त करने से क्या लाभ ? ऐसा शायद ही कोई उदाहरण मिल सके, जिसमें किसी ऐसे प्रसंग पर विचार करने के लिए कोई कमीशन नियुक्त हुआ हो, और उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कमीशन ने इस ढंग से अथवा इस दृष्टि से निर्णय किया हो, जिसे तटस्थ, निष्पक्ष अथवा निरपेक्ष कहा जा सके। कृपा करके भारत की गरीब जनता पर अनावश्यक अतिरिक्त कर थोपने की अभिसंधि से बाज आकर मानवता का महत्त्व स्थापित करें।"

इस प्रकार ब्रिटिश संसद में दादाभाई ने कदम-कदम पर भारत में अंग्रेजी राज्य, उसकी गलत नीति और उसकी समर्थक इंगलैंड की सरकार को सख्ती से हर उस प्रस्ताव से रोकने का भरसक प्रयत्न किया, जो भारतीयों के हित में हानिकारक हो सकता था। उन्होंने भारत की गरीबी, उसके कारणों और निवारण पर आँकड़ों के साथ ऐसे सारगर्भित भाषण दिए कि न केवल संसद के ही कान खड़े हो गये, बल्कि इंगलैंड की जनता की दृष्टि में भारत में अंग्रेजी शासन और उसकी रीति-नीति ग्रेट ब्रिटेन के गौरव के विरुद्ध अनुभव होने लगी। साथ ही उसका बल पाकर भारत में स्वाधीनता के अंकुर उभर पड़ने के लिए अंदर ही अंदर कसमसाने लगे। बांबे एसोसिएशन, ईस्ट इंडिया एसोसियेशन आदि राजनीतिक एवं नागरिक संस्थाओं को समझाती हुई भारतीय स्वाधीनता की भावनाएँ जल्दी ही कांग्रेस के रूप में बोलने लगीं।

दादाभाई ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का स्वागत किया और पूरे हृदय से यह मानकर कि—हाँ, यह संस्था भारत की स्वाधीनता के लिए एक बड़ा साधन सिद्ध होगी, अपनी पूरी आत्मा से उसके समर्थन एवं विकास में लग गये। उन्होंने इंगलैंड की जनता और वहाँ के राज तथा जननेताओं को न केवल कांग्रेस का महत्त्व ही स्वीकार कराया, बल्कि यह विश्वास दिलाकर कि भारत की यही एकमात्र सच्ची राजनीतिक संस्था है, उसकी बात सुनने और उस पर विचार के लिए मजबूर कर दिया। दादाभाई की इस सफलता को यदि भारतीय स्वाधीनता का सूत्रपात कहा जाये, तो अतिशयोक्ति न होगी और निस्संदेह इन्हीं प्रयत्नों के आधार पर उन्हें भारतीय स्वाधीनता का जो जनक कहा जाता है, वह गलत नहीं है।

दादाभाई जब तक इंगलैंड में रहे, कांग्रेस से संबंध बनाए रहे और विदेश में रहकर भी उसके विकास के लिए प्रयत्न करते रहे। बहुत बार वे कांग्रेस का अध्यक्ष पद सँभालने के लिए अनुरोधपूर्वक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बुलाए, गए और उस पद पर प्रतिष्ठित किये गये। जब-जब दादाभाई ने कांग्रेस का अध्यक्ष-पद सँभाला, तब-तब उसे एक नया जीवन, नूतन दिशा और विशेष बल प्रदान करते रहे। दादाभाई ने अपनी योग्यता, प्रभाव तथा देश-भक्ति के बल पर कांग्रेस में ऐसे अक्षय प्राण भर दिये कि वह प्रचंड आँधी-तूफान और गोला-बारूद के बीच भी अपना सतेज अस्तित्व बनाए रही और आखिर एक दिन भारत को स्वाधीन बनाकर दादाभाई का स्वप्न सच्चा कर दिया।

इस प्रकार यदि दादाभाई के संपूर्ण जीवन पर दृष्टि डाली जाये, तो पता चलेगा कि उन्होंने अपने दीर्घजीवन में जितना सम्मान, जितनी ख्याति और अविरल सेवाओं का जितना पुण्य अर्जित किया उतना संसार में विरले लोग ही अर्जित कर सके हैं। उन्हें अभिनव भारत के पितामह, भारतीय स्वाधीनता के जनक और भारत के वयोवृद्ध महापुरुष आदि के आदर सूचक जिन संबोधनों के साथ स्मरण किया जाता है, वह सर्वथा उचित तथा सत्य ही हैं।

जून १९१७ में जब लगभग ९३ वर्ष की आयु में दादाभाई ने स्वर्गारोहरण किया तब तक वे भारत और भारतीय जनता की इतनी सेवा कर चुके थे, जिसका ब्यौरा एक ग्रंथ की सामग्री बन सकती है। अपने जीवन काल में उन्होंने स्वाधीनता के जो बीजारोपण किये थे, वे यद्यपि तब तक पूरी तरह वृक्ष तो जरूर न बन पाये थे तथापि उनका अंकुरण देख सकने का अवसर उन्हें मिल सका था, किंतु भारत को जिस पथ पर चलाकर वे छोड़ गये थे, वह पथ तो सच्चा और सरल पथ था, जिस पर चलते रहकर भारत अपने अभीष्ट लक्ष्य स्वाधीनता को प्राप्त कर सका है। उन्होंने राजनीति में जिस सत्य और अहिंसा का अवलंबन लिया था, उसको आजीवन निबाहा। उन्होंने किसी भी लाभ के लिए असत्य अथवा हिंसा का समर्थन कभी नहीं किया। यही कारण था कि जिस समय भारत के कुछ लोगों ने राजनीतिक सफलता के लिए हिंसा का अवलंब ग्रहण किया, दादाभाई को गहरा आघात लगा। उन्होंने कहा था—

"मेरा निवेदन है कि प्रत्येक हिंसात्मक उपाय से बचा जाये। हमारी शिकायतें अनेक है। अनिवार्य सुधारों के लिए आवश्यक प्रयत्नों और आत्मत्याग द्वारा शांतिपूर्ण ढंग से धैर्यपूर्वक और लगन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के साथ संघर्ष जारी रखिये। बिना किसी भय अथवा संकोच के ब्रिटिश राष्ट्र के अंतःकरण में अपनी माँगों तथा अधिकारों की प्रेरणा भरते रहिये। यद्यपि अंग्रेजों ने हमें गुलाम बनाया हुआ है तथापि मानवता के नाते उनसे मित्रता का भाव रखते हुए अपने ध्येय की ओर बढ़ते जाइये और इस प्रकार भारतीय चरित्र की उत्कृष्टता की छाप संसार पर छोड़िये। जो लोग हिंसा का रास्ता अपना रहे हैं, वे अपने महान् ध्येय को गहरी क्षति पहुँचा रहे हैं।"

दादाभाई को अपनी निर्विकार नीति में पूरा विश्वास था और जब वे इस संसार से विदा हुए, तो एक ऐसे महान् व्यक्ति को मंत्र देकर गये, जो उनकी नीति का ठीक-ठीक उत्तराधिकारी था और वह महान् व्यक्ति थे महात्मा गांधी। जिन्होंने उनकी सत्य और अहिंसा की नीति को आगे बढ़ाकर, भारत को उसकी स्वाधीनता तक पहुँचा दिया।

दादाभाई, जो कि अपने पिता के नाम के साथ दादाभाई नौरोजी के नाम से प्रसिद्ध हैं, को जितना भारतीयों ने समझा और सम्मान दिया उससे कम अंग्रेजों ने भी नहीं समझा, जिसका प्रमाण इंग्लैंड के श्री वर्डउड के उस पत्र से हो जाता है, जो उन्होंने 'दि टाइम्स ऑफ इंडिया' के लंदन स्थिति प्रतिनिधि को लिखा था—

"दादाभाई नौरोजी उन लोगों में से हैं, जिनका किसी भी विषय का ज्ञान संपूर्ण ही होता है और जो तब तक जीवित रह सकते हैं, जब तक जीवन की आकांक्षा का स्वयं ही त्याग न कर दें। जब भी मैं उनसे मिला, उन्होंने कभी अपने विषय में कोई बात नहीं की। उन्होंने सदैव ही अपने कार्यों के विषय में बात की, सो भी न भूत काल की और न भविष्यत् की वरन् केवल वर्तमान काल की। वे हर बात को बड़े ही स्पष्ट और गंभीर ढंग से रुचिपूर्वक किया करते थे। उनके साथ बात करने पर ऐसा लगता था कि मृत्यु हो जाने पर भी दादाभाई नौरोजी नहीं मरेंगे। केवल उनका पार्थिव शरीर ही मरेगा। वे सदा-सर्वदा के लिए अजर-अमर ही रहेंगे।"

भारतीय समाज और भारतीय राष्ट्र की सेवा में दादाभाई ने कितना योग दिया, इसका अनुमान कर सकना कठिन है। कारण यह है कि उनकी कार्य-प्रणाली अत्यंत शांतिपूर्ण, स्थायी और प्रदर्शन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहित थी। आजकल तो उनकी श्रेणी के नेताओं का सर्वथा अभाव ही हो गया है। अब जो कोई राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश करता है, वह कोई महत्त्वाकांक्षा लेकर ही आगे कदम बढ़ाता है। कितने ही व्यक्ति 'नेतागिरी' का अर्थ स्पष्टतया निजी लाभ पर दृष्टि रखना ही समझते हैं। यही कारण है कि आज सभी दलों के अधिकांश नेताओं की ईमानदारी के संबंध में शिकायतें ही सुनने में आती हैं और उनमें से जितने सत्ता प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं, उन पर दो-चार को छोडकर, भ्रष्टाचार द्वारा बड़ी-बड़ी जायदादें खड़ी कर लेने का इल्ज़ाम अवश्य ही लगाया जाता है।

ऐसे अवसर पर दादाभाई जैसे निःस्वार्थ नेता की स्मृति बरबस हो आती है। एक आजकल के नेता हैं, जो रुपये की खातिर बदनामी, निंदा, अपमान तक की परवाह नहीं करते और एक दादाभाई थे जिन्होंने अपनी कमाई का रुपया लगाकर देश-हित की योजनाओं को साकार रूप दिया। वे जीवन-निर्वाह के लिए व्यापारिक क्षेत्र में काम करते थे और उसी में से समय और धन बचाकर जहाँ जैसी आवश्यकता जान पड़ती थी, उसी प्रकार सहायता करते थे।

भारत की गरीबी से वे बड़े व्यथित होते थे। उन्होंने इंगलैंड और भारत दोनों जगह आंदोलन करके जनता को यह समझाने की चेष्टा की कि भारत की जनता गरीबी के कारण बहुत दुःख पा रही है और इसकी जिम्मेदारी सरकार के ऊपर है। इसी उद्देश्य को लेकर वे इंगलैंड की पार्लियामेंट की सदस्यता के लिए खड़े हुए और बड़ा परिश्रम करके उसमें सफलता प्राप्त की। पर पार्लियामेंट में जाकर उन्होंने अपने स्वार्थ की पूर्ति का कोई उपाय नहीं किया, वरन् वे निरंतर भारत के गरीबों की बुरी हालत की तरफ ब्रिटिश जनता का ध्यान आकर्षित करने का प्रयत्न करते रहे। उन्होंने बतलाया कि भारत की धनहीन प्रजा से उसकी हैसियत की अपेक्षा बहुत अधिक कर वसूल किया जाता है, जिससे उसकी स्थिति दिन पर दिन गिरती जाती है। उन्होंने कहा कि "भारत में अंग्रेजी राज्य के परिणामस्वरूप जो कुछ हो रहा है, उससे तो उसकी सभ्यता के नाम पर धब्बा ही लग रहा है। अगर कोई यह कहता है कि अंग्रेज या अन्य योरोपीय जातियाँ एशियाई जातियों से किसी दृष्टि से श्रेष्ठ हैं,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो यह कदापि ठीक नहीं है। भारत में अंग्रेजी राज्य बहुत कुछ अन्याय पर आधारित है। अंग्रेजी राज्य की खराबियाँ तभी दूर हो सकती हैं, जब वह भारतवासियों को स्वशासन का अधिकार सौंप दें।"

दादाभाई के चरित्र से हम जो सबसे बड़ी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, वह यही है कि मनुष्यों को परोपकार तथा लोक-कल्याण के कार्य निःस्वार्थ भावना रखकर ही करने चाहिए। जो लोग सार्वजनिक सेवा के नाम पर अपना प्रभाव तथा शक्ति बढ़ाकर आर्थिक या सत्ता संबंधी लाभ उठाने की चेष्टा करते हैं, उनकी बातों पर और नेकनीयती पर विश्वास नहीं किया जा सकता। इससे वे देश और जाति का अनहित तो करते ही हैं, क्योंकि अविश्वास की भावना उत्पन्न हो जाने से राष्ट्रीय आंदोलन कमजोर पड़ जाता है, पर साथ ही उनका भी भला नहीं होता। वे एक-दो बार धोखा-धड़ी से काम भले ही निकाल लें और कुछ रुपया कमा लें या किसी बड़े पद या अधिकार को हथिया लें, पर अंत में ऐसे व्यक्तियों की कलई खुल ही जाती है और वे पहले से भी बुरी स्थिति में पहुँच जाते हैं।

❑ ❑

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें : http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org